विचार शक्ति

- चन्द्र प्रकाश
वैज्ञानिक ई- 1

"यद भवं तद भवाति" अर्थात आप जैसा सोचते हैं वैसा ही बनते हैं. यह जगत हमारी आन्तरिक अवस्था का मात्र एक प्रतिबिम्ब है. हम जिन परिस्थितियों से गुजरते हैं अथवा जिन लोगों के सम्पर्क में आते हैं वह सब हमारी अंतरस्थिति का प्रतिरूपण हैं. दूसरे शब्दों में हम अपनी वास्तविकता का निर्माण खुद करते हैं. हम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हैं. आप वैसा ही बनते हैं जैसा कि आप सोचते हैं. आपको वही मिलता है जिसकी आप परिकल्पना करते हैं.

विचारों में अद्भुत शक्ति होती हैं. विचार ही निर्माण क्रिया के संचालक होते हैं. इसी कारण से हम सह-निर्माता भी कहे जा सकते हैं. जब भी हमारे मन में किसी विचार या भावना का उद्गम होता है तो एक निर्माण प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है. जैसी करनी वैसी भरनी. यदि आपके विचारों से विश्वासघात रूपी बाण का प्रहार किया गया है जो निश्चय ही आपके साथ भी विश्वसासघात होगा. यदि आपके विचरों में घृणा का समावेश है तो आपकों भी घृणा का पात्र बनना पड़ेगा. आपने अपनी वास्तविकता का निर्माण स्वयं किया है उसके लिये किसी अन्य को दोष नहीं दिया जा सकता.

यह जगत आपके आन्तरिक विचारों और भावनाओं को प्रतिबिम्बित करता है. जो हमारे अन्दर है वही वास्तविकता बाहर प्रदर्शित होती है. आन्तरिक विचारों और बाहय परिणामों में सामंजस्य स्थापित रहता है. आपको वही मिलता है. जिसे आप पेम करते हैं तथा वह भी मिलता है जिसे आप घृणा करते हैं. "यह मेरे साथ क्यो हुआ" -- इसमें कोई विरोधाभास नहीं है. इसका निर्माण हमने स्वयं किया है. लेकिन हम अपने विचारों और कर्मफल के पारस्परिक संबंध को प्रायः समझ नहीं पाते. शायद दोनों के बीच समय अन्तराल इतना अधिक होता है कि हम कारण एवं प्रभाव का उचित आकलन करने में असमर्थ रहते हैं. यह समय अन्तराल एक सप्ताह, एक माह, एक वर्ष, एक दशक या उससे भी अधिक हो सकता है.

जीवन का निरन्तर पुनर्निरीक्षण हमें अपने विचारों एवं परिणामों के संबंध कों समझने में सहायक हो सकता है. इन लौकिक सिद्धातों के संदर्भ में यदि हम अपने प्रश्नों का उत्तर पाने में असमर्थ रहते हैं तो शायद पुनर्जन्म का सिद्धांत ही हमारी जिज्ञासा का विवेचन कर सकता है.

* * * * *